

डॉ. नट हेम, नीतिवचन, व्याख्यान 19

लेमुएल की माँ, नीतिवचन 31:1-9

© 2024 नॉट हेम और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. नॉट हेम और नीतिवचन की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या 19 है, राजा लेमुएल की माँ की शिक्षा, नीतिवचन अध्याय 31, पद 1 से 9 तक।

नीतिवचन की बाइबिल पुस्तक पर व्याख्यान 19 में आपका स्वागत है। अब हम पुस्तक के अंतिम अध्याय में हैं जो दो भागों में आती है और मेरा मानना है कि वे संबंधित हैं, जैसा कि मैं अगले और अंतिम व्याख्यान में बताऊंगा।

लेकिन इस व्याख्यान में, हम पद 1 से 9 तक, राजा लेमुएल की माँ की शिक्षाओं को देखने जा रहे हैं, जिन्हें लेमुएल सदियों से अपने पाठकों और हमारे साथ साझा करता है। परिचय के कुछ शब्द. श्लोक 1 में, वह व्याख्यान जो रानी माँ अपने बेटे को दे रही है, जो श्लोक 2 से 9 तक है, का परिचय दिया गया है, मैं श्लोक 1 से पढ़ूंगा, राजा लेमुएल की बातें, एक प्रेरित कथन जो उसकी माँ ने उसे सिखाया था, और एनआरएसवी में, एक दैवज्ञ जो उसकी माँ ने उसे सिखाया था।

और फिर, हम देखते हैं कि हमारे यहाँ वही शब्द है, मस्सा। और यहाँ अब, रानी माँ के शब्द, एक महिला के शब्द, आगुर के प्रेरित कथन की तर्ज पर एक प्रेरित कथन घोषित किए गए हैं जिसे हमने पिछले व्याख्यान के अध्याय 30 में देखा था। तो, मुझे लगता है, यह महत्वपूर्ण है, यह जानकारी हमें यहां विभिन्न चीजों पर दी गई है।

नंबर एक, इज़राइल, उत्तरी साम्राज्य और यहूदा दोनों के राजाओं के सभी जटिल अनुक्रमों में कोई ज्ञात राजा लेमुएल नहीं है, जो बाइबिल की ऐतिहासिक पुस्तकों में बहुत ही सावधानीपूर्वक प्रलेखित हैं। इस हद तक कि जिन राजाओं ने केवल कुछ ही दिनों तक शासन किया है, उन्हें भी सावधानीपूर्वक दर्ज किया जा रहा है। और हमें अक्सर यह मूल्यांकन भी दिया जाता है कि उन्होंने राजाओं के रूप में कितना अच्छा काम किया।

आमतौर पर, उन्होंने बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। इसलिए, राजा लेमुएल को यहां पाया जाना बहुत आश्चर्यजनक है, जिसका शायद लगभग निश्चित रूप से मतलब है कि यह राजा एक विदेशी राजा है, एक गैर-इजरायल राजा है, संभवतः-हम नहीं जानते कि, निश्चित रूप से, यह मामला हो सकता है - संभवतः एक गैर-इज़राइली माँ। हालाँकि यह संभवतः हो सकता है कि यह माँ मूल रूप से एक इज़राइली थी जिसका विवाह राजा लेमुएल के पिता की रानी बनने के लिए हुआ था।

संभव है, लेकिन जानने का कोई तरीका नहीं है। लेकिन सबसे पहले, यह उसके नैतिक, नैतिक और ज्ञान संबंधी रुख को समझा सकता है, जिसे वह अपने बेटे के साथ साझा करती है, जो कि नीतिवचन की पुस्तक की समग्र शिक्षा के अनुरूप प्रतीत होता है। और यह यह भी बताएगा कि एक विदेशी राजा की इस शिक्षा को बाइबिल की नीतिवचन पुस्तक के इस अंतिम संग्रह में कैसे जगह मिली होगी।

वैसे, यह मुझे उस पुराने व्याख्यान की ओर वापस लाता है जिसके बारे में हमने बात की थी, एमेनेमोप के निर्देश को अध्याय 22 से 24 में लिया गया है। और मैंने यह स्पष्ट नहीं किया कि यह कैसे हुआ। मैंने समझाया कि मुझे लगता है कि यह काफी स्वाभाविक और अच्छी बात है।

लेकिन बहुत संभव है कि ऐसा क्यों हुआ, यह अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का एक अन्य प्रकार का हिस्सा है, क्योंकि जो लोग शायद दरबारी या राजनयिक थे, इज़राइल और मिस्र के बीच राजदूत थे, उन्हें इस लेखन का सामना करना पड़ा होगा। या हो सकता है कि मिस्र का कोई राजदूत इस लेख को, संभवतः उपहार के रूप में, इज़राइल के दरबार में लाया हो। तो, ये ऐसे प्रकार के स्पष्टीकरण हैं जो इसे प्रशंसनीय बना देंगे कि क्यों अंतरराष्ट्रीय लेखन, दार्शनिक लेखन का आदान-प्रदान किया जा रहा है और बाइबिल की पुस्तकों के संग्रह में भी इसे अपनाया और अपनाया जा रहा है।

इसलिए, मुझे लगता है कि यह आकर्षक और रोमांचक है कि हमारे पास अंतरराष्ट्रीय ज्ञान को इज़राइल के पवित्र धर्मग्रंथों के हिस्से के रूप में एक प्रेरित कथन के रूप में शामिल किया गया है। यहां दूसरी वास्तव में दिलचस्प और आकर्षक बात यह है कि हमने, अन्य बातों के अलावा, एक महिला द्वारा दिए गए एक लंबे भाषण को बाइबिल में एक प्रेरित कथन के रूप में दर्ज किया है। मैंने इसका उल्लेख पिछले व्याख्यानों में से एक में किया था जब हमने नीतिवचन 11.22 को देखा था, कि यद्यपि पुस्तक स्पष्ट रूप से मुख्य रूप से पुरुष दर्शकों के लिए निर्देशित है, पुरुष लेखकों द्वारा लिखी गई है, फिर भी महिलाएं सभी प्रकार के स्तरों पर इतनी प्रमुख भूमिका निभाती हैं।

न केवल वांछनीय पत्नियों और प्रेमिकाओं के रूप में बल्कि खतरनाक ध्यान भटकाने वाले के रूप में भी। न केवल मूर्ख महिलाओं के रूप में, बल्कि उन महिलाओं के रूप में जो वास्तव में अपने आस-पास के अन्य लोगों के जीवन को बेहतर बना सकती हैं, विशेष रूप से पतियों और बच्चों और व्यापक परिवार के रूप में। यहां अब हमारे पास बाइबिल की किताब में अंतरराष्ट्रीय स्तर की एक अग्रणी महिला शख्सियत की उपस्थिति का उदाहरण है।

तो, किसी भी अन्य चीज़ के अलावा, यह केवल यह दर्शा रहा है कि महिलाएँ महत्वपूर्ण हैं, निश्चित रूप से इस बाइबिल पुस्तक में। और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन दुर्भाग्य से हमारे पास इस पर विस्तार से जाने का समय नहीं है। लेकिन अभी, मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि महिलाएँ आध्यात्मिक मामलों में, धार्मिक मामलों में, बाइबिल में महत्वपूर्ण हैं।

और वे सिखाते और निर्देश देते हैं, यदि आप चाहें, तो वे बाइबिल के पन्नों पर उपदेश देते हैं। और यहाँ एक उदाहरण है. तो, वह क्या कह रही है? जैसा कि मैंने पिछले अध्याय में किया था, मैं इसे फिर से श्लोक दर श्लोक समझाऊंगा।

सौभाग्य से, यह इतना लंबा समय नहीं है कि हम यहां ऐसा कर सकें। सुनो, मेरे बेटे, वह कहती है, सुनो, मेरे गर्भ के बेटे, सुनो, मेरे बेटे, मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर। यह थोड़ा ऊपर है, है ना? वह अपने बेटे से इस तरह बात क्यों कर रही है? हम नहीं जानते कि वह कितने साल का था, लेकिन

मुझे ऐसा लगता है जैसे वह उसके साथ एक छोटे लड़के की तरह व्यवहार कर रही है, एक छोटे शरारती स्कूली लड़के की तरह।

जब तक उसे उसे बताने की ज़रूरत होती है, तीन बार सुनें, मेरे बेटे, मेरे बेटे, मेरे बेटे, मेरे गर्भ के बेटे पर जोर देते हुए, उसने स्पष्ट रूप से कुछ गलत किया है। वह उससे कह रही है। और वह उसकी अच्छी समझ और उसकी माँ के रूप में उसके सम्मान की अपील कर रही है कि इस बार वह वास्तव में उसकी बात सुने।

और फिर, जब हम इसे पढ़ते हैं और सोचते हैं, ओह, यह बाइबिल है, जो भी हो, और हम कविता के काम करने के तरीके के विवरण पर ध्यान नहीं देते हैं, तो हम शायद यहां डांटने वाले स्वर और घर्षण को भूल गए हैं दो परिवार के सदस्यों के बीच। यह राजा है, लेकिन राजा को उसकी माँ ने मना कर दिया है। तो वह उसे क्यों मना कर रही है? खैर, शायद हम पता लगा सकें कि ऐसा क्यों है।

तो जब तक वह कहती है, दूसरी बात वह तीन बार ना कह देती है। नहीं, मेरी कोख के बेटे, नहीं, मेरी कोख के बेटे, नहीं, मेरी मन्नत के बेटे। तो, वह ऐसा क्या कर रहा है जिसके लिए वह 'नहीं' कह रही है? ठीक है, अगला श्लोक कहता है, मत करो, यहाँ चौथा नहीं है, अपनी ताकत महिलाओं को मत दो, अपने तरीके उन लोगों को मत दो जो राजाओं को नष्ट करते हैं।

वैसे, पिछले अध्याय में एक लड़की के साथ एक पुरुष के व्यवहार में विनम्रता की कमी बिल्कुल फिट बैठ रही है। यहाँ एक राजा है, निःसंदेह, सदियों से राजा अनिवार्य रूप से इस तरह की चीज़ों के लिए प्रसिद्ध हैं।

यौन भोग। और यह रानी माँ कहती है, यहाँ समस्या नंबर एक है, केवल एक नहीं, बल्कि कई हैं। और दूसरी बात, वह कहती है, ये कई प्रकार की स्त्रियाँ हैं, जो राजाओं को नष्ट कर देती हैं।

अब, निःसंदेह, हम यह नहीं जान सकते कि ये महिलाएँ कौन थीं। हालाँकि, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इस नौकरी के लिए अधिकतर उम्मीदवार संभवतः वेश्याएँ ही हैं। उनमें से बहुत सारे, उनमें से बहुत सारे।

और रानी माँ चिंतित है कि उसका बेटा अपने शयनकक्ष पर बहुत अधिक ध्यान देकर राष्ट्र के शासक के रूप में अपने कर्तव्यों की उपेक्षा कर रहा है। और इसीलिए ये स्त्रियाँ संभावित रूप से राजाओं का विनाशक होती हैं। क्योंकि यह उन्हें अपना काम ठीक से करने से विचलित करता है।

मैं कहूँगा कि यह कोई सामान्य बाइबिल कथन नहीं है जिसमें कहा गया हो कि वेश्याएं बुरी होती हैं। लेकिन यह कथन जो कह रहा है वह यह है कि पुरुष, या महिलाएं, जो निरंकुश यौन संबंधों द्वारा अपनी जिम्मेदारियों से विचलित हो जाते हैं, उनके नष्ट होने का खतरा है। इसलिए, जोर महिलाओं की दुष्टता पर नहीं है।

यह पुरुषों की मूर्खता पर है। और मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारे यहां एक महिला अन्य महिलाओं के बारे में बात कर रही है। और किसी तरह से नहीं।

लेकिन यहां मुद्दा अन्य महिलाओं को बुरा दिखाने का नहीं है। मुख्य बात यह नहीं है। मुख्य मुद्दा उसके बेटे को मूर्खतापूर्ण व्यवहार के प्रति चेतावनी देना है।

इस मामले में मूर्खतापूर्ण और खतरनाक व्यवहार. वह आगे कहती है, यह श्लोक 4 है, हे लमूएल, यह राजाओं के लिये नहीं है, यह राजाओं के लिये नहीं है कि वे दाखमधु पियें, और न हाकिमों के लिये मदिरा की इच्छा करें। अन्यथा वे पीएंगे और जो कुछ आदेश दिया गया है उसे भूल जाएंगे और विकृत हो जाएंगे और सभी पीड़ितों के अधिकारों को नष्ट कर देंगे।

तो यहाँ रानी माँ की ना में एक और हाँ है। वह कहती है कि यह राजाओं के पीने का काम नहीं है। और बेशक मुद्दा शराब पीने और खूब पीने का है।

तो यहाँ एक और व्याकुलता है। न केवल यौन व्याकुलता बल्कि नशीले पेय के माध्यम से भी व्याकुलता। इस मामले में शराब.

और वह शराब पीने के संबंध में खतरा बता रही है और संभवतः राज करने के व्यवसाय के अलावा अन्य कार्यों से विचलित होने के संबंध में अप्रत्यक्ष रूप से खतरा यह है कि समाज में सबसे कमजोर लोग उस व्यक्ति द्वारा उपेक्षित हो रहे हैं जो उनके लिए जिम्मेदार है। . वह यहां इस बात पर जोर देती हैं. या वे पी लेंगे और जो आदेश दिया गया है उसे भूल जायेंगे।

संभवतः यह ईश्वरीय आदेश है। भगवान की आज्ञाएँ. और सभी पीड़ितों के अधिकारों को नष्ट कर देगा.

तो, सभी पीड़ितों का अधिकार. यह उन लोगों के लिए सामाजिक न्याय के बारे में है जो समाज में कमजोर हैं। हमें विधवाओं, अनाथों, विदेशियों, गरीबों के पास वापस भेज दिया जाता है।

वे लोग जो खुद की मदद नहीं कर सकते और उन्हें किसी और की जरूरत है जो इतना मजबूत हो कि उनके लिए दरार में खड़ा हो सके और उनकी मदद कर सके और उनके लिए हस्तक्षेप कर सके। जिस धर्मी की चर्चा हमने कुछ व्याख्यानों में पहले की थी जब हमने अध्याय 25 के अंत को देखा था। जिसे एक शुद्ध फव्वारा और एक स्पष्ट झरना माना जाता है।

छंद 6 से 7 में, रानी माँ आगे बढ़ती है और यह फिर से अत्यधिक डांटने वाले स्वर का हिस्सा है। ऐसे में अब कटाक्ष. वह अपने बेटे को समझाती रहती है और उसे अत्यधिक शराब न पीने के लिए प्रोत्साहित करती रहती है।

और वह कहती है, जो मर जाता है उसे मदिरा पिला, और जो संकट में पड़ा हो उसे दाखमधु पिला। उन्हें पीने दो और अपनी गरीबी भूल जाओ और अपना दुख फिर याद न रखो। अब वह सचमुच बोल रही है, वह अपने बेटे से कह रही है कि बेसहारा और गरीबों और उन लोगों को शराब पिलाओ जो खुद की मदद नहीं कर सकते।

जिनके बारे में उसने अभी-अभी उससे कहा था कि उसे देखभाल करने की ज़रूरत है। लेकिन क्या वास्तव में यहाँ यही अभिप्राय है? नहीं, वैसे यह उन कारणों में से एक है कि मैं हमेशा कल्पनाशील पढ़ने पर जोर देता हूँ।

बिना किसी और व्याख्या के शाब्दिक रूप से सीधा-सीधा पढ़ने पर यह लगेगा कि यह रानी माँ द्वारा अपने बेटे को यह कहने के लिए प्रोत्साहन था, देखो, जिस तरह से तुम गरीबों की मदद करते हो, वह यह है कि तुम स्वयं शराब पीना बंद करो और उन्हें नशे में डाल दो। खैर, यह संकट से निपटने का एक तरीका है। लेकिन यहाँ उसका मतलब निश्चित रूप से यह नहीं है।

यहां जो हो रहा है, यह घोर व्यंग्य है. तुम्हारे पास, मेरे बेटे, कोई बहाना नहीं है। तुम राजा हो।

ये गरीब लोग नहीं जानते कि उन्हें अपने साथ क्या करना चाहिए क्योंकि वे बहुत असुरक्षित हैं। कोई संभवतः यह समझ सकता है कि यदि उनके पास ऐसा करने के लिए पर्याप्त पैसा होता तो वे शराब क्यों पीते। क्योंकि वे सिर्फ अपना दुख भूलना चाहते हैं।

लेकिन आपके पास ऐसा कोई बहाना नहीं है. वह यही कह रही है. और फिर वह सकारात्मकता की ओर आगे बढ़ती रहती है।

तो सभी ना-ना के बजाय अब वह कह रही है कि यह हाँ, हाँ, हाँ है जो आपको करना चाहिए। श्लोक 8 और 9. उन लोगों के लिए बोलें जो सभी निराश्रितों के अधिकारों के लिए नहीं बोल सकते। बोलें, सही तरीके से न्याय करें और गरीबों और जरूरतमंदों के अधिकारों की रक्षा करें।

इसलिए राजा को समाज में सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने, बनाए रखने और स्थापित करने में सक्रिय भूमिका निभानी है, जो समाज में सबसे गरीब और सबसे कमजोर लोगों का समर्थन करता है। प्राचीन दुनिया में यह सुनना कितनी आश्चर्यजनक बात थी। सत्ता में बैठे लोगों की जिम्मेदारी न केवल गलत काम करने से बचना है बल्कि गरीबों, जरूरतमंदों, निराश्रितों, कमजोरों और उन लोगों की वकालत में सक्रिय रूप से शामिल होना है जो खुद की मदद नहीं कर सकते।

मुझे लगता है कि यह शक्तिशाली चीज़ है। मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जो नीतिवचन 25 के बारे में कुछ व्याख्यानों में मैंने जो कहा था, उससे संबंधित है। जो धर्मी लोग दुष्टों के सामने रास्ता छोड़ देते हैं, वे गंदे झरने और प्रदूषित झरने की तरह हैं।

उन्होंने धर्मी लोगों के रूप में अपना जीवन देने वाला, जीवन बढ़ाने वाला, जीवन कायम रखने वाला प्रभाव खो दिया है। वे अब धर्मी नहीं रहे। और मुझे लगता है कि यह सच है, जैसा कि हम यहां नीतिवचन की पुस्तक से देखते हैं, समाज के उन सभी सदस्यों के लिए जिनके पास दूसरों की मदद करने का साधन है।

और नीतिवचन 31 के अनुसार यह विशेष रूप से सच है, राजा लेमर की रानी माँ, समाज में अधिकार और शक्ति वाले लोगों के संबंध में। यह हमें व्याख्यान 19 के अंत में लाता है। यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नुट हेम हैं।

यह सत्र संख्या 19 है, राजा लेमुएल की माँ की शिक्षा, नीतिवचन अध्याय 31, पद 1 से 9 तक।